ट्रस्ट व प्रबंधकारिणीके सदस्य

श्रीआचार्य कुंथुसागर ग्रंथमाला पुष्प नं० २५



श्रीमत्परमपूज्य विद्वच्छिरोमणि प्रातःस्मरणीय दिगंबर
जैनाचार्यश्रीकुन्थुसागरजीमहाराजविरचित

नरेशधर्मदर्पण

— प्रकाशक —

श्रीमान् खांदू नरेश (बांसवाडा).

—*—

तृतीयावृत्ति } वीर, संवत् २४७० { मूल्य
१००० } सन् १९४४ { कर्तव्यपालन.

श्रीआचार्य कुंथुसागर ग्रन्थमाला.

उद्देश—परमपूज्य आचार्यश्रीके द्वारा रचित ग्रंथोंका प्रकाशन व प्रचार करना व अनुकूलताके अनुसार इतर प्राचीन जैनग्रंथोंका उद्धार तथा प्रकाशन करना है।

सामान्य नियम.

१ इस ग्रंथमालाको जो सज्जन अधिकसे अधिक सहायता देना चाहेंगे वह सहर्ष स्वीकृत की जायगी।

२ जो सज्जन १०१) या अधिक देकर इस ग्रंथमालाका स्थायी सभासद बनेंगे उनको ग्रंथमालासे प्रकाशित सर्वग्रंथ पोस्टेज खर्च लेकर विनामूल्य दिये जायेंगे।

३ जो सज्जन ५१) या अधिक देकर हितचिंतक बनेंगे उनको पोस्टेज व अर्धमूल्य लेकर प्रकाशित ग्रंथ दिये जायेंगे।

४ जो सज्जन २५ या अधिक देकर सहायक बनेंगे उनको पोस्टेज व लागतमूल्य लेकर प्रकाशित ग्रंथ दिये जायेंगे।

५ अन्य सज्जनोंको निश्चितमूल्यसे दिये जायेंगे।

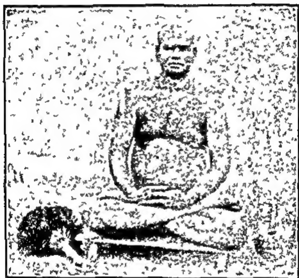
६ ग्रंथोंके मूल्यसे आई हुई रकमका उपयोग ग्रंथमालाके द्वारा प्रकाशित होनेवाले ग्रंथोंके उद्धार में ही होगा।

७ ग्रंथमालाके ट्रस्टडीड होकर मुंबईमें यह रजिस्टर्ड होचुका है।

सहायता भेजनेका पता—सेठ गोविंदजी रावजी दोशी
ठि. रावजी सखाराम दोशी, कोशाध्यक्ष, सोलापुर.

ग्रंथमालासंबंधी सर्व प्रकारका पत्रव्यवहार नीचे लिखे पतेपर करें

वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
मंत्री—आचार्य कुंथुसागर ग्रंथमाला, सोलापुर.



श्रीपरमपूज्य, पूज्यपाद, प्रातःस्मरणीय, जगद्वंद्य, जगदुद्धारक,
नरेंद्रपूज्य, व्याख्यानवाचस्पति, कविवर्य,
वादीभकेसरी, विद्वच्छिरोमणि,
आचार्यवर्य १०८ श्रीकुन्थुसागरजी महाराज.

····ग्रंथकर्ताका परिचय····

महर्षि प्रातःस्मरणीय आचार्य श्रीकुन्थुसागरजी महाराजने इस ग्रंथकी रचना की है। आप एक परम वीतरागी, विद्वान् मुनिराज हैं। आपकी जन्मभूमि कर्णाटक प्रान्त है जिसे पूर्वमें कितने ही महर्षियोंने अलंकृत कर जैनधर्मका मुख उज्ज्वल किया था। इसलिए " कर्णेषु अटतीति " सार्थक नामको पाकर सबके कानोंमें गूंज रहा है।

कर्णाटक प्रांतके ऐश्वर्यभूत बेळगांव जिल्हेमें ऐनापुर नामक सुंदर नगर है। वहांपर चतुर्थकुलमें अलंकारभूत अत्यंत शांत स्वभाववाले सातप्पा नामक श्रावकोत्तम रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी साक्षात् सरस्वतीके समान सद्गुणसंपन्न थी। इसलिए सरस्वतीके नामसे ही प्रसिद्ध थी। सातप्पा व सरस्वती दोनों अत्यंत प्रेम व उत्साहसे देवपूजा व गुरूपासित आदि सत्कार्यमें सदा मग्न रहते थे। धर्मकार्योंमें वे प्रधानताको समझते थे। उनके हृदयमें आंतरिक धार्मिक श्रद्धा थी। श्रीमती सौ. सरस्वतीने संवत् १९२० में एक पुत्ररत्नको जन्म दिया। इस पुत्रका जन्म कार्तिक शुक्लपक्षकी द्वितीयाको हुआ। मातापिताओंने पुत्रका जीवन सुसंस्कृत हो इस सुविचारसे जन्मसे ही आगमोक्त संस्कारोंसे संस्कृत किया। जातकर्म संस्कार होनेके बाद शुभमुहूर्तमें नामकरण संस्कार किया जिसमें इस पुत्रका नाम रामचंद्र रखा गया। बादमें चौलकर्म, अक्षराभ्यास, पुस्तकग्रहण आदि आदि

संस्कारोंसे संस्कृत कर सद्विद्याका अध्ययन कराया । रायचंद्रके हृदयमें बाल्यकालसे ही विनय, शील व सदाचार आदि भाव जागृत हुए थे । जिसे देखकर लोग आश्चर्ययुक्त व संतुष्ट होते थे । रायचंद्रको बाल्यावस्थामें ही साधु संयमियोंके दर्शनमें उत्कट इच्छा रहती थी । कोई साधु ऐनापुरमें जाते तो यह बालक दोड़कर उनकी वंदनाके लिए पहुंचाता था । बाल्यकालसे ही इसके हृदयमें धर्मके प्रति अभिरुचि थी । सदा अपने सहधर्मियोंके साथ तत्वचर्चा करनेमें ही समय बिताता था । इस प्रकार सोलह वर्ष व्यतीत हुए । अब माता पितापिताओंने रायचंद्रको विवाह करने का विचार प्रगट किया । नैसर्गिक गुणसे प्रेरित होकर रायचंद्रने विवाहके लिए निषेध किया एवं प्रार्थना की कि पिताजी ! इस लौकिक विवाहसे मुझे संतोष नहीं होगा । मैं अलौकिक विवाह अर्थात् मुक्तिलक्ष्मीके साथ विवाह कर लेना चाहता हूं । मातापिताओंने पुनश्च आग्रह किया । मातापिताओंकी आज्ञोल्लंघनभयसे इच्छा न होते हुए भी रायचंद्रने विवाहकी स्वीकृति दी । मातापिताओंने विवाह किया । रायचंद्रको अनुभव होता था कि मैं विवाह कर बडे बंधनमें पड गया हूं ।

विशेष विषय यह है कि बाल्यकालसे संस्कारोंसे सुदृढ होने के कारण यौवनावस्थामें भी रायचंद्रको कोई व्यसन नहीं था । व्यसन था तो केवल धर्मचर्चा, सत्संगति व शास्त्रस्वाध्यायका था । बाकी व्यसन तो उससे घबराकर दूर भागते थे । इस प्रकार पच्चीस वर्ष पर्यंत रायचंद्रने किसी तरह घरमें वास किया । परंतु

बीचबीचमें यह भावना जागृत होती थी कि भगवन् ! मैं इस गृहबंधनसे कब छूटूं ? जिनदीक्षा लेनेका भाग्य कब मिलेगा ? वह दिन कब मिलेगा जब कि सर्वसंगपरित्यागकर मैं स्वपरकल्याण कर सकूं ?

दैववशात् इस बीचमें मातापिताओंका स्वर्गवास हुआ। विकराळ काळकी कृपासे भाई और बहिनने भी बिदा ली। तब रामचंद्रजीका चित्त और भी उदास हुआ। उनका बंधन छूट गया। तब संसारकी अस्थिरताका उन्होंने स्वानुभवसे पक्का निश्चय करके और भी धर्ममार्गपर स्थिर हुए।

रामचंद्रके श्वसुर भी धनिक थे। उनके पास बहुत संपत्ति थी। परन्तु उनको कोई संतान नहीं था। वे रामचंद्रसे कई दफे कहते थे कि यह संपत्ति (घर वगैरह) तुम ही ले लो, मेरे यहांके सब कारोबार तुम ही चलाओ। परन्तु रामचंद्र अपने श्वसुरको दुःख न हो इस विचारसे कुछ दिन रहा भी। परंतु मनमनमें यह विचार किया करता था कि " मैं अपनी भी घरदार छोडना चाहता हूं। इनकी संपत्तिको लेकर मैं क्या करूं "। रामचंद्रकी इस प्रकारकी वृत्तिसे श्वसुरको दुःख होता था। परन्तु रामचंद्र लाचार था। जब उसने सर्वथा गृहत्याग करनेका निश्चय ही कर लिया तो उनके श्वसुरको बहुत अधिक दुःख हुआ।

आपने श्रीपरमपूज्य आचार्य श्री शांतिसागर महाराजके पादमूलको पाकर अपने संकल्पको पूर्ण किया। सन् २५ में श्रवणबेळगोळाके मस्तकाभिषेकके समय पर आपने क्षुल्लक दीक्षा ली व

सोनागिर क्षेत्रपर मुनिदीक्षा ली। और मुनि कुंथुसागरके नामसे प्रसिद्ध हुए। जब आप घर छोड करके साधु हुए तब आपकी धर्मपत्नी धर्मध्यान करती हुई घरमें ही रहीं।

आपने अपनी क्षुल्लक व ऐलक अवस्थामें बहुतही धर्मप्रभावनाके कार्य किये हैं। संस्कारोंके प्रचारके लिये सतत उद्योग किया है। आपने मुनि अवस्थामें उत्तरप्रांतके अनेक स्थानोंमें विहार कर धर्मकी जागृति की है। गुजरात प्रांत जो कि चारित्र व संयमकी दृष्टिसे बहुत ही पीछे पडा था, उस प्रांतमें छोटेसे छोटे गांवमें भी विहार कर लोगोंको धर्ममें स्थिर किया है।

आपमें स्वपरकल्याणकारी निर्मल ज्ञान होनेके कारण आप सर्वजनपूज्य हुए हैं। आपकी जिस प्रकार ग्रंथरचना कलामें विशेष गति है, उसी प्रकार वक्तृत्वकलामें भी आपकी व्युत्पत्ति है। श्रोताओंके हृदयको आकर्षण करनेका प्रकार, वस्तुस्थितिको निरूपण कर भव्योंको संसारसे तिरस्कार विचार उत्पन्न करनेका प्रकार आपको अच्छी तरह अवगत है। आपके गुण, संयम आदियोंको देखनेपर यह कहे हुए बिना नहीं रह सकते कि आचार्य शांतिसागरजी महाराजने आपका नाम कुंथुसागर बहुत सोच समझकर रक्खा है।

आपने अपनी माता सरस्वतीका नाम सार्थक बनाया है। क्योंकि आप अपने नाम तथा काममें सरस्वतीपुत्र ही सिद्ध हुए हैं। चतुर्विंशतिजिनस्तुति, शांतिसागर चरित्र, बोधामृतसार, निजात्मशुद्धिभावना, मोक्षमार्गप्रदीप, ज्ञानामृतसार, स्वरूपदर्शनसूर्य, नरेशधर्मदर्पण मनुष्यकृत्यसार आदि नीतिपूर्ण तत्वगर्भित



खांडु राज्यमें आचार्यश्रीका सार्वजनिक भाषण, जिसमें खांडु नरेश भी उपस्थित हैं।



खांडु राजमहलमें आचार्य श्री कुंथुसागरजीका भाषण.

ग्रंथरत्नोंकी उत्पत्ति आपके ही अगाधज्ञानरूपी खानसे हुई है, हो रही है और होती रहेगी।

आपके दुर्लभ संस्कृतभाषा-पांडित्यपर बडे २ विद्वान् पंडित भी मुग्ध हो जाते हैं। आपकी ग्रंथनिर्माणशैली अपूर्व है। वर्णन-कौशल्य निराला है। आगम विषयोंको आधुनिक ढंगसे स्पष्टीकरण करनेमें आप सिद्धहस्त हैं। आपकी भाषण-प्रतिभा शान्त व गंभीर मुद्राके सामने बडे २ राजाओंके मस्तक झुकते हैं। गुजरात प्रांतके प्रायः सभी संस्थानाधिपति आपके आज्ञाधारी शिष्य बने हुए हैं। अबतक हजारोंकी संख्यामें जैनेतर आपके सदुपदेशसे प्रभावित होकर मकारत्रय (मद्य,मांस,मदिरा) के नियमी व यमी बन चुके हैं। गुजरात प्रांतमें आपके द्वारा जो धर्मप्रभावना हुई है व हो रही है वह इतिहासके पृष्ठोंपर सुवर्णाक्षरोंमें चिरकालतक अंकित रहेगी। गुजरातमें कई संस्थानिकोंने अपने राज्यमें इन तपोधनके जन्मदिनके स्मरणार्थ सार्वजनिक छुट्टी व सार्वत्रिक अहिंसादिन मनानेके फर्मान निकाले हैं। सुदासना स्टेटके प्रजावत्सल नरेश तो इतने भक्त बन गये हैं कि महाराजका जहां २ विहार होता है वहां प्रायः उनकी उपस्थिति रहती है। कभी अनिवार्य राज्यकार्यसे परवश होकर महाराजसे विदा लेनेका प्रसंग आनेपर माताको बिछुडते [redacted] पुत्रके समान नरेशकी आंखोंमेंसे आंसु बहते हैं। धन्य है ऐसी गुरुभक्ति! युवराज कुमार साहेब रणजीतसिंहजी पूज्यवर्यके परमभक्त हैं। वे कई समय महाराजकी सेवामें उपस्थित होकर आत्महितके तत्वोंको पूछते हुए महाराजकी सेवामें ही दीर्घ समय व्यतीत करते

हैं। तारंगाजीसे महाराजका विहार होनेका समाचार जानकर कुमार साहेबसे रहा नहीं गया, वे पूज्यश्रीके चरणोंमें उपस्थित होकर (अश्रुपात करते हुए) महाराजसे निवेदन करते हैं कि स्वामिन्! पुन कब दर्शन मिलेगा ? कितनी अद्भुतभक्ति है यह! पूज्यश्रीने आज गुजरातमें जो धर्मजागृति की है वह " न भूतो न भविष्यति " है। गुजरातमें जैन क्या, जैनेतर क्या, हिंदु क्या, मुसलमान क्या, उनके चरणोंके भक्त हैं। आज पूज्यश्रीका स्थान बहुत ऊंचा है। अस्तु, माणिकपुर, पेथापुर, डुंगरपुर, बांसवाडा आदि अनेक राज्योंके अधिपति आपके सद्गुणोंसे मुग्ध हैं। पिछले दिन बडोदा राज्यमें आपका अपूर्व स्वागत हुआ। राज्यके न्यायमंदिरमें स्टेटके प्रधान -सर कृष्णमाचारीकी उपस्थितिमें आचार्यश्रीका सार्वजनिक सत्योपदेश हुआ।

आप भगवान् समंतभद्र जिनसेनादिका स्मरण दिलाते हैं। ऐसे महाविभूतियोंसे ही धर्मका मुख उज्वल होता है। ऐसे प्रातः स्मरणीय पूज्य महर्षिके चरणोंमें त्रिकाल अनन्त नमोस्तु है।

प्रकृत ग्रंथ भी श्रीपरमपूज्य आचार्यश्री की निर्मल वर्धमान चारित्रके फलसे उत्पन्न विद्वत्ताके द्वारा निर्मित है। अभी कुछ दिन पहिले खांदु राज्यमें महाराजका पदार्पण हुआ, वहां अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। उसकी स्मृतिमें श्री खांदु नरेशने इसे प्रकाशित कराया है, उनके इस साहित्यप्रेम व गुरुभक्तिके लिए हम कृतज्ञ हैं।

विनीत–गुरुचरण सेवक,
वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
मंत्री–श्रीआचार्य कुंथुसागर ग्रंथमाला.



श्रीगुरुभक्त, प्रजावत्सल, न्यायनीतिनिपुण
स्वनामधन्य खाँडुनरेश शंकरसिंहजी साहब बहादुर
(इस ग्रंथके प्रकाशक)

उनका भाग्य इससे भी कहीं ऊंचे पदकी प्राप्तिके लिए आगे २ दौड़ता जा रहा था। उस समय महारावलजी श्रीविजयसिंहजीके महाराज कुंवर श्रीउम्मेदसिंहजी अपने पिताके बाद राज्याधिकारी हुए और उनके महाराज कुंवर श्रीभवानीसिंहजी बंशपुरके नरेश हुए लेकिन उनके कोई संतान न थी। इसलिए खांदुके छोटे कुमार बहादुरसिंहजी जो तेजपुर गोद गये थे, बंशपुरकी गादीपर गोद ले लिये गये और महारावलजी हुए। इधर महाराज सरदारसिंहजीके बाद महाराज मानसिंहजी हुए और मानसिंहजीके बाद महाराज फतेहसिंहजीने राज्य किया। वे बड़े पराक्रमी थे। उनके कुंवर श्रीजसवंतसिंहजीका युवावस्थामें ही स्वर्गवास हो जानेसे महाराज श्रीफतेहसिंहजीके पौत्र श्री रघुनाथसिंहजी गादीपर आये। आप बड़े स्वामिभक्त थे। अपने मालिकको मालिक समझा। उन्होंने अपने स्वहस्तसे कस्टम व अबकारी हक्क बंशपुर राज्यपर कर्ज विशेष बढ़ जानेसे ऋणमुक्तिके हितार्थ इन हक्कोंको बंशपुर नरेशके चरणोंमें समर्पण कर दिये। तबसे इन दो हक्कोंके सिवाय फारेस्ट ज्युडीशियल पोलिस-माफ इत्यादि २ तमाम दुसरे हक्कोंका आज तक स्वतंत्र रूपसे खांदु संस्थान भोग रहा है। महाराज रघुनाथसिंहजीके सुपुत्र विद्यमान महाराज साहब श्रीशंकरसिंहजी आजकल खांदु नगरीकी उन्नतिपर कटिबद्ध हैं। महाराज साहबका जैसा नाम है वैसे ही गुण हैं। आप संतोंकी सेवा करनेमें अग्रगण्य हैं। आपकी धर्मपरायणता सद्भावना सरलजीवन प्रशंसनीय है। इतनी बड़ी जागीर होते हुए भी आपने इस वैभवका कभी भी उपभोग करनेकी इच्छा प्रगट नहीं की है। आप जबसे कुंवर थे तबसे स्वोपार्जित द्रव्यसे ही अपने जीवनका पोषण करना आपका आदर्श ध्येय था और आज भी स्वतः कृषी करके अपने

जीवनका निर्वाह करते हैं। श्रीसच्चिदानंद आनंद स्वरूपकी कृपासे आपके दो सुकुमार गोपालसिंहजी व गंगासिंहजी है। आपके जीवनश्रेणीको देखते हुए श्रीमद् भगवन् रामचंद्रजीका स्मरण हो आता है और आना ही चाहिए। क्यों कि ये भी उनके ही वंशज हैं। आपके दोनो कुमारोंका आदर्शजीवन लवकुशके समान प्रतीत होता है और श्रीमान् ज्येष्ठ कुमार गोपालसिंहजी साहब पितृभक्त आदर्श चरित्रशाली हैं। विद्वान्, गुणवान्, धैर्यवान् व अनेक सद्गुणोंसे युक्त हैं। श्रीमान् महाराज साहब श्रीगुरुदेव श्रीस्वामी नर्मदानंदजीके प्रसादसे कठिनसे कठिन दुःखमें भी धैर्य धारण कर दुःखमें भी सुख मनाते रहे हैं।

आपकी खादुनगरीमें महान् पोलिटीकल व्यक्तीयां रेसिडेंट मेवाड ए. जी. जी. राजपूताना व कई युरोपियन ऑफिसर्स, श्रीमान् महारावलजी साहब बहादुर इत्यादि २ ने अतिथ्य सत्कार पाया।

खादु संस्थानके संबंध डुंगरपुर, बांसवाडा, झाबुवा, भादपूर, रतलाम, पीपलोदा आदि बडे २ राज्य व सूर, ईडर, केरोट, बनकोडा इत्यादि संस्थानोंके साथ हुए हैं। आप श्रीमहाराणाश्री उदयपुरके दर्शनार्थ पधारे थे और वहां आपका उत्तम प्रकारसे सन्मान हुआ एवं श्रीमहाराणाजीके दरबारमें बैठक व दोनों ताजिम प्राप्त है। आपका अंतःकरण दीनदुःखीयोंकी दशाको देखते ही गद्गद होजाता है। आपकी अहर्निश यही भावना बनी रहती है कि मेरी प्रजा किस प्रकार समृद्धिशाली बने। आपने अजमेर मेयो कालेजसे डिप्लोमा प्राप्त की है। वैसे ही आपके राजकुमारने भी डेली कॉलेज इंदोरसे डिप्लोमा प्राप्त की है। आप राजनीतिज्ञ हैं। खादु नगरीमें श्री आचार्य [illegible] जीके पदार्पणसे अनेक आत्माओंको

पदेश द्वारा कल्याण प्राप्त हुआ है। उसमें केवल श्रीमहाराज साहेब खांदूकी आंतरिक भावनाने ही विद्युत्शक्तिका काम किया है। उनके सरल प्रेमी स्वभावने ही तपोनिधि श्रीआचार्यजीके हृदयमें स्थान प्राप्त किया है यह बात कम नहीं है बल्कि ऐसे संतोंके ज्ञानामृतवचनोंका पान करनेसे नरेशधर्मके यथार्थ स्वरूपको पहिचाननेकी लालसा वृद्धिंगत होनेसे महाराज साहबके अंतःकरणमें एक प्रकारकी उत्कंठा होरही है कि कब संतोंके समागमसे सच्चे स्वरूपको पहचान सकूं। आपके असीम प्रेमसे त्यागमूर्ति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीगुरु नर्मदानंदजी स्वामी, श्रीमद् त्यागमूर्ति स्वामीजी श्री नित्यानंदजी नेपाली व अनेक महान् व्यक्तियोंने खांदु नगरीको अपने पदकमलोंसे पावन किया है और महाराज साहबके दबे हुए सुसंस्कारोंमें कल्याणकी जागृति उत्पन्न कर दी है। इसी तरह तपोनिधि श्रीमद् जगद्गुरु आचार्यश्री कुंथुसागरजीने पधारकर विशेष रूपसे अंतर्भावनामें परिवर्तन कर दिया है बल्कि कल्याणमार्गका दिग्दर्शन करा दिया है फलतः श्रीमहाराज साहब शंकरसिंहजी व उनके राजपरिवारमें विशिष्ट आत्मकल्याणकी भावना जागृत हुई है एवं सद्गुरुवोंके दर्शनकी लालसा बढी हुई है। हमारी आंतरिक श्रद्धा है कि सद्गुरुवोंका प्रसाद खांदु नरेश, राजपरिवार व प्रजावर्गको सन्मार्गगामी बननेमें सहायक होगा।

राजभक्त–विनीत,

मदनमोहन सोमेश्वर भट्ट

(साबुआनिवासी)

कारभारी संस्थान खांदु.

★ नरेशधर्मदर्पण ★

श्रीवीरं जिनं हरिहरं विमलं च बुद्धं,
नत्वा हिताय वरशांतिसुधर्मपात्रौ ।
ग्रंथो वरो नृपतिधर्मसुदर्पणोऽयं,
सुक्षेन कुंथुगणिना च विरच्यतेऽथ ॥ १ ॥

संस्कृतार्थ—विघ्नविनाशनार्थं, नास्तिकतापरिहारार्थं शिष्टाचारपरिपालनार्थं गुणस्मरणार्थं च इष्टदेवतागुरुनमस्कारं कृत्वाचार्यैः प्रतिज्ञा क्रियते, किमिति ? विरच्यते, केन ? कुंथुगणिना, कुंथुसागराचार्य इति प्रख्यातेन सूरिणा, कथंभूतेन ? सुक्षेन धीमता न्यायव्याकरणछंदोऽलंकारादिशास्त्रकुशलेन, कः ग्रंथः, किनाम धेयः ? नृपतिधर्मसुदर्पणेति विश्रुतः (नरेशधर्मदर्पण) कथंभूतः वरः, अभ्युदयनिःश्रेयसकारणत्वात् श्रेष्ठः, किमर्थं विरच्यते—हिताय भव्यानां हिताय ऐहिकपारलौकिकसुखप्राप्त्यर्थं, कं नत्वा, जिनं जयति दुर्भेद्यकर्माष्टकर्मारातीन् इति जिनः तं वीतरागं, हरिहरं, विगतमलं बुद्धं वा, नाऽत्रकश्चिन्नामनिर्विवादः, अपितु तदोक्त गुणयुक्तं नत्वा, तथा दीक्षाशिक्षागुरुं आचार्यवरशांतिसागर सूरिं, सुधर्मसागरसूरिं च नत्वा ग्रंथोऽयं विरच्यते ॥

Having bowed to Shree Jineshwer Hrihar Budha this book named "Naresh Dharma-Darpan" [mirror showing the duties of a king] is written by Shree Digamber Acharya Kunthusagarji for procuring universal peace.

जिसने कर्मरूपी शत्रुको जीत लिया है एवं अंतरंग बहिरंग संपत्तिको देनेमें जो समर्थ हैं ऐसे गुणसे विशिष्ट जिन, हरिहर, बुद्धके नामसे प्रसिद्ध कोई भी क्यों न हो, जो आत्मकल्याण करनेकी इच्छा रखनेवाले भव्योंको व नरेशोंको पथप्रदर्शन करते हों,ऐसे परमदेव भगवान् एवं मेरे दीक्षागुरु व शिक्षा गुरु श्री चारित्रचक्रवर्ति आचार्य शांतिसागरजी व सुधर्मसागरजीके चरणोंमें नमस्कार कर यह नरेशधर्मदर्पण ग्रंथकी रचनाकी जाती है । इसप्रकार विद्ध्चिछरोमणि आचार्य श्री कुंथुसागर महाराज प्रतिज्ञा करते हैं । प्रजाओंको न्यायपूर्वक पालन करनेका दायित्व जिन शासकों पर हैं उनके कर्तव्यपथको सूचित करना यह आचार्यश्री का उद्देश्य है । इसी पवित्र हेतुसे इस ग्रंथका निर्माण किया जाता है ।

વીતરાગપરમદેવ જિન હરિહર બુદ્ધ દેવાચરણે નમસ્કાર કરીને ગ્રંથ નિર્માણ કરવા માટે આચાર્ય પ્રતિજ્ઞા કરે છે. નરેશ ધર્મદર્પણ નામનો આ ગ્રંથ સંપૂર્ણ કલેશને નાશ કરવાવાળો તથા આ લોકમાં અને પરલોકમાં પણ મનવાંછીત ફલ આપવાવાળો છે. તે માટે આ ગ્રંથ સ્વાનંદરસિક,પરમદયાળુ પરમ વિદ્વદ્વર્ય શ્રીકુન્થુસાગરનામના દિગંબર જૈન આચાર્યે દુનીઆના સમસ્ત જીવોના હિતને માટે બનાવીને પ્રસિદ્ધ કર્યો છે. માટે આ ગ્રંથનું સંપૂર્ણ રીતે ધ્યાનપૂર્વક મનન કરવું જોઈએ કે જેથી તેની પૂરેપુરી મહત્તા આત્મામાં ઠસી જાય અને તેના રસાસ્વાદન થી પોતાનો આત્મા અલગ થવા ન પામે.

वीतराग परमदेव जिन, हरिहर बुद्ध आदि नांवानें विख्यात इष्टदेवास नमस्कार करून आचार्य ग्रंथनिर्माण करण्याची प्रतिज्ञा करितात. " नरेशधर्मदर्पण " नामक ग्रंथ सर्व दुःखाचा नाश करून इह व परलोकीं मनोवांछित फल देणारा आहे. स्वानंदरसिक परमदयाळु परम विद्वद्वर्य सुप्रसिद्ध दिगंबर जैनाचार्य श्री १०८ कुंथुसागर महाराज यांनीं जगांतील सर्व जीवांचें हिताकरितां हा ग्रंथ तयार केला आहे. तरी या ग्रंथाचें ध्यान व मननपूर्वक वाचन केल्यानें आत्मा आपल्या स्वस्वरूपाला प्राप्त करून घेऊं शकेल आणि आत्मसाम्राज्यरूपी स्वराज्यपदावर अधिष्ठित होऊं शकेल.

ಯಾವನು ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನೂ, ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ ಕರ್ಮಗಳೆಂಬ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿರುತ್ತಾನೆಯೋ ಅಂಥಹ ಜಿನೇಶ್ವರ ಬುದ್ಧ, ಹರಿಹರ ಆದಿ ಹೆಸರುಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ ವೀತರಾಗ ದೇವನನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಇಹ-ಪರಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಮನೋಭಿಲಷಿತ ರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮಿಯನ್ನೂ ಅರ್ಥಾತ್ ಅಭೀಷ್ಟ ಫಲವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವಂಥ ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಕ್ಲೇಶಗಳನ್ನು ನಾಶ ಮಾಡುವ " ನರೇಶಧರ್ಮದರ್ಪಣ " ವೆಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನು, ಸ್ವಾನಂದರಸಿಕರೂ ಪರಮದಯಾಳುಗಳಾದ ವಿದ್ವದ್ವರ್ಯ ಆಚಾರ್ಯ ಶ್ರೀ ಕುಂಥುಸಾಗರ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಸಮಸ್ತವಿಶ್ವದ ಶಾಂತಿಗೋಸ್ಕರವಾಗಿ ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಆದುದರಿಂದ ಇದನ್ನು ಮನನಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಭವ್ಯನೂ ಓದಬೇಕು. ಈ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಓದುವುದರಿಂದ ಈ ಆತ್ಮನು ತನ್ನ ಯಥಾರ್ಥ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪ್ರಾಪ್ತಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಮರ್ಥನಾಗುತ್ತಾನೆ ಮತ್ತು ಆತ್ಮಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವೆಂಬ ಸ್ವರಾಜ್ಯವನ್ನೂ ಪಡೆಯುವನು.

प्रश्नः—हे गुरुदेव ! इस दुनियामें उत्तम राजा कौन कहलाता है ? कृपया उनका लक्षण बतलाईये ।

उत्तरः—

दुष्टप्रजानां दमनं च कृत्वा शिष्टप्रजानां यमिनां च रक्षां ।
करोति यो दुर्व्यसनाद्विरक्तः स एव श्रेष्ठो भुवि राजवर्गे ॥१॥
एवं सदा रक्षति राजतंत्रं, शत्रुं नु यः कोऽपि भवेन्न बाधकः ।
तत्कार्यसिद्धिं यदि वीक्ष्य शक्तो, भवेत्कदाचिन्नृपति मान्यधेय ॥२॥

संस्कृतार्थ—हे गुरुदेव ! कोऽसौ शास्तरशासकः इति पृष्ठे सति प्रतिपादयतेऽत्र ग्रंथकारैः । शासकस्य कर्तव्यं दुष्टनिग्रहः शिष्ट परिपालनं च, येन चास्मिन् संसारे शांतिसुखादिकं भवेत्, दुष्टप्रजानां हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहरतानां परपीडाकरणशीलानां दमनं कर्तव्यं, तथा च शिष्टानां सज्जनानां परोपग्रहनिरतानां अभ्युदयनिःश्रेयसमार्गप्रदर्शकानां यमिनां संयमिनां च सदा पालनं कर्तव्यं । दुष्टानां निग्रहेणैव शिष्टजनानां मार्गो निष्कंटको भवेत् येन च ते साधवो लोकहितकार्याणि कुर्युः । पुनः कथंभूतः भवेत्स शासकः । दुर्व्यसनाद्विरक्तः मद्यमांसमधुसेवनं, चौर्याखेट परदारपण्यांगनासेवितश्चेति सप्तव्यसनानि, एतानि संसारवृद्धि कारणानि इहामुत्र च दुःखहेतुकानि वर्तंते । ये च राजानो व्यसनेष्वेतेष्वासक्ता भवंति ते च राज्यपालनविषयेऽनासक्ताश्च भवेयुः, एवं च प्रजापरिपालनं सम्यक्तया न स्यात् । प्रजाश्च व्यसनाक्रांता भवेयुः । तस्माद्यथोक्तगुणविशिष्टः शासको यदि भवेत्तर्हि स एव राजवर्गे श्रेष्ठ इति कथ्यते ।

एवं दुष्टनिग्रहशिष्टरक्षणादिविधिना यः आत्मपुत्रवत् प्रजापरिपालनं करोति, राज्यतंत्रस्य रक्षणं च करोति स एव प्रशस्तः शासकः। तस्यान्तरंगं कोपि न ज्ञातुं समर्थः, सः किं विचारयति किं वा करोतीति ज्ञातुं न शक्नोत्यन्यः। स च सदा लोकहितका-रकसाधनेष्वेव प्रवर्तयति। यदा च तस्य कार्यसिद्धिर्भवति तस्य मधुरफलं चास्वादयितुं लोके प्राप्नोति तं दृष्ट्वा कदाचित् जानाति। यदि सः राज्यतंत्रप्रवीणो नृपतिः राज्यरक्षणोपायं गुप्त-रूपेण न करोति तर्हि दुराचाररताः राजानः तं ज्ञात्वा पूर्वत एव स्वकार्यसिद्धिं प्रति यत्नं कुर्वंति इति प्रजानां कष्टश्च संजायते। अतो राजनीति मार्गमनुसृत्य राज्यतंत्ररक्षणोपाये कर्तव्यं कार्यम्।

(That King is the best) who conducts the administration of his body politic in such manner that no other ruler can decipher it before its complete achievement. After complete accomplishment of his objects the other ruler may perhaps know the inner currents, but not otherwise or [tell them]. Such a ruler, like Ramchandraji and Bharat is always free from distractions and also achieves his own welfare as well as that of others and at last attains Salvation.

जो राजा दुष्टोंका निग्रह कर शिष्ट व साधु संतोंका संरक्षण करता है एवं संपूर्ण व्यसनोंसे (मद्य, मांस और मदिराका सेवन करना, चोरी करना, शिकार करना,

परस्त्रीसेवन करना और वेश्यागमन करना ये सप्त व्यसन हैं।) रहित होते हुए अर्थात् संपूर्ण दुराचारसे रहित होते हुए अपने राज्यतंत्रको अर्थात् राज्यरक्षणनीतिको इस प्रकार सुरक्षित और गुप्त रखता है कि कोई भी दुराचारी राजा उसको जाननेमें समर्थ नहीं होसकता। किन्तु जब उस राज्य-तंत्रका कार्य सिद्ध हो जाता है तब उस कार्यको देखकर उस राज्यतंत्रका (राज्यरक्षणनीतिका) अभिप्राय भले ही जान सकता है (जान सकेगा) अन्यथा कभी नहीं। यदि वह दुराचारी राजा प्रथमसे ही राज्यतंत्रको जानेगा तो अपने दुराचारको प्रबल बनानेमें तत्पर रहेगा, और सारे विश्वको पापरूपी समुद्रमें जरूर डुबा देगा। इसलिये वह उत्तम राजा अपने राज्यतंत्रको अनर्घ्यमणिके समान गुप्त रखता है। ऐसे राजाको उत्तम-राजा कहते हैं। और ऐसे राजा ही भरतचक्रवर्ति रामचं-द्रजीके समान इस लोकमें स्वपरकल्याण करते हुए और स्वहस्तसे दानपूजादि करते हुए उत्तमोत्तम कार्य करके मोक्षलक्ष्मीका अधिपति बनेगा अर्थात् वह राजा शीघ्रतासे मोक्ष जायगा। ऐसा जान कर पूर्वोक्त कार्य करनेसे ही नरजन्म सफल होगा। और राज्यकृत्य पूर्ण होगा। यदि पूर्वोक्त कार्य कोई राजा न करे तो उसका जीना मरना दोनों ही समान है ऐसा समझना चाहिए। इस प्रकार उत्तमराजाका यह लक्षण है।

જે રાજા દુષ્ટલોકોનું શાસન કરીને સાધુ મહાત્માઓને સંરક્ષણ કરે એવં જે રાજા સંપૂર્ણ વ્યસનોથી (મદ્ય, માંસ, દારૂનું સેવન, જુગાર, ચોરી, પરસ્ત્રી સેવન અને વેશ્યાગમન કરવું એ સાત વ્યસન છે) રહીત હોવા છતા [સંપૂર્ણ દુરાચારથી મુક્ત હોવા છતાં] પોતાના રાજ્યતંત્રને અર્થાત રાજ્ય રક્ષણનીતિને એવી રીતે સુરક્ષિત અને ગુપ્ત રાખે છે કે કોઇપણ દુરાચારી રાજા તેને જાણી ન શકે, પણ જ્યારે તે રાજ્યતંત્રનું કાર્ય સિદ્ધ થઇ જાય છે ત્યારે તે કાર્યને દેખીને તે રાજ્યતંત્રનું [રાજ્યરક્ષણ વિધિનું] અનુમાન ભલે તે (દુરાચારી રાજા) કરી શકે, તે શિવાય તો નહિજ. પણ જો તે દુરાચારી રાજા પ્રથમથીજ તે રાજ્યતંત્રને સમજી જશે તો પોતાના દુરાચારરૂપી પ્રપંચી જાળને સબળ બનાવવામાં જરૂર તે મશગુલ રહેશે, એટલુંજ નહિ પણ આખી દુનિઆને પાપરૂપી સમુદ્રમાં ડુબાવી દેશે. તે રાજાએ (ઉત્તમ રાજાએ) પોતાના રાજયતંત્રને ચિંતામણી સમાંન સુરક્ષિત રાખવું જોઇએ અને તે રાજા ઉત્તમરાજા તરીકે ઓલખાય એટલુંજ નહિ પણ ભરતચક્રર્તિ રામચંદ્રજીની માફક લોકમાં સ્વપર કલ્યાણ કરીને અને પોતાના હાથે દાનપૂજા કરી તથા ઉત્તમોત્તમ કાર્ય કરીને મોક્ષરૂપી લક્ષ્મીને પ્રિય પતી બનશે અર્થાત મોક્ષગામી બનશે. એવું જાણીને પુર્વોક્તકાર્ય કરવામાંજ નરજન્મની સાર્થકતા છે. કદાચીત પૂર્વોક્ત કાર્ય કોઇ રાજા ન કરે તો એમનુ જીવવુ અને મરવું બન્ને સમાન છે એમ સમજવું જોઇએ, એવી રીતે ઉત્તમ રાજાનુ લક્ષણ કહ્યું છે.

प्रश्न—श्री गुरुवर्या ! या जगामध्यें उत्तम राजा कोणास म्हणता येईल ? तें कृपा करून सांगा.

उत्तर—जो राजा दुष्ट लोकांचें दमन करून साधु-संतांचें संरक्षण करितो आणि सर्व व्यसनापासून (मद्य मांस भक्षण करणें, चोरी करणें, शिकार करणें परस्त्रीसेवन करणें, वेश्यागमन, जुवा खेळणें, वगैराता-दि पापापासून) अर्थात् सर्व दुराचारापासून दूर राहून आपलें राजतंत्र व राज्यरक्षण नीतीस अशा रीतीनें गुप्त व सुरक्षित राखतो कीं दुसरा कोणीही दुराचारी अथवा नास्तिक त्यास जाणू शकू नये. ज्या वेळेस त्या राज्य तंत्राचें किंवा नीतीचे कार्य पूरे होईल त्या वेळेसच तो [दुराचारी राजा] त्या राज्यतंत्राचे अथवा नीतिचें अनु मान करूं शकेल,तर त्या दुराचारी राजास प्रथमपासूनच त्या राज्यतंत्राची अथवा नीतिची माहिती झाली तर तो दुराचारी राजा आपलें दुष्टकार्यास सिद्धीस नेणेस तयारीत राहील आणि तेणें करून संपूर्ण जगास पापरूपी समुद्रांत बुडविणेस कारणीभूत होईल-उत्तम राजाने आपल्या राज्य तंत्रास अथवा नीतीस चिंतामणिरत्नाप्रमाणें किंबहुना त्याहीपेक्षां जास्त सुरक्षित व गुप्त ठेविलें पाहिजे. आणि असेच राजे सम्राट् भरतचक्रवर्ति श्रीमद् महाराजा श्री रामचंद्रजी आदि राजा सारखे स्वतःच्या हातून दानपूजा परोपकारादि उत्तमोत्तम कार्य करून स्वात्मचिंतन व दुस-

त्याचे हितसाधन करून मोक्षरूपी लक्ष्मीस संपादन करतील हे निःसंशय खरे आहे. जे राजे असे (उत्तम राजाप्रमाणे) वर्तन न ठेवतील त्यांचे जगणे व मरणे सारखेच आहे अर्थात् ते जिवंत असताहि मेल्याप्रमाणे समजावें या प्रमाणें उत्तम राजाचें लक्षण आहे.

ಪ್ರಶ್ನೆ:—ಗುರುವರ್ಯರೇ ! ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಯಾರು ಉತ್ತಮ ರಾಜರೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುವರು ? ಮತ್ತು ಅವರ ಲಕ್ಷಣವೇನು ? ದಯವಿಟ್ಟು ಹೇಳಿರಿ ?

ಉತ್ತರ:—ಯಾವ ರಾಜನು ದುಷ್ಟಪ್ರಜೆಗಳ ನಿಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಶಿಷ್ಟ ಪ್ರಜೆಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಗ್ರಹ ಮಾಡುತ್ತಾನೆಯೋ, ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ವ್ಯಸನಗಳಿಂದ (ಮದ್ಯ, ಮಾಂಸ, ಮಧುಗಳನ್ನು ಸೇವಿಸುವುದು, ಕಳವು ಮಾಡುವುದು, ಬೇಟೆಯಾಡುವುದು, ಜೂಜಾಡುವುದು, ಪರಸ್ತ್ರೀಗಮನ ಮತ್ತು ವೇಶ್ಯಾಗಮನ, ಈ ಏಳು ವ್ಯಸನಗಳು) ರಹಿತನಾಗಿ ಅರ್ಥಾತ್ ಸಮಸ್ತ ದುರಾಚಾರಗಳಿಂದ ನಿವೃತ್ತನಾಗಿ ತನ್ನ ರಾಜ್ಯತಂತ್ರ ರಾಜ್ಯರಕ್ಷಣ ನೀತಿಯನ್ನು ಬೇರೆ ಯಾರಾದರೂ ದುಷ್ಟರಾಜರು ತಿಳಿಯದಂತೆ ಸುರಕ್ಷಿತವಾಗಿಯೂ ಮತ್ತು ಗುಪ್ತವಾಗಿಯೂ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆಯೋ, ಅವನೇ ಉತ್ತಮ ರಾಜನು. ಆ ರಾಜನೀತಿಯು ಕಾರ್ಯವು ಸಿದ್ಧವಾದನಂತರ ಅವನ ರಾಜನೀತಿಯನ್ನು ಬೇರೆ ದುಷ್ಟರಾಜನು ಊಹಿಸಬಹುದು. ಅಷ್ಟರವರೆಗೆ ತಿಳಿಯಲಸಾಧ್ಯವು. ತನ್ನ ರಾಜ್ಯತಂತ್ರವು ದುರಾಚಾರಿಗಳಿಗೆ ಗೊತ್ತಾದರೆ ಅವರು ಮತ್ತಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ದುರಾಚಾರಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಸುವುದರಲ್ಲಿ ಸಂಲಗ್ನರಾಗುವರು. ಮತ್ತು ಸಂಪೂರ್ಣ ವಿಶ್ವವನ್ನು ಪಾಪರೂಪೀ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸುವರು. ಆದುದರಿಂದ ಯಾವ ರಾಜನು ಅನರ್ಘ್ಯರತ್ನದಂತೆ ತನ್ನ ರಾಜ್ಯತಂತ್ರವನ್ನು ಗುಪ್ತವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆಯೋ ಅವನೇ ಉತ್ತಮ ರಾಜನೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಾನೆ. ಇಂಥಹ ಉತ್ತಮ ರಾಜರು ಭರತಚಕ್ರವರ್ತಿ ರಾಮಚಂದ್ರರಂತೆ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಸ್ವಪರಕಲ್ಯಾಣವನ್ನು

ಮಾಡುತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವಹಸ್ತದಿಂದ ದಾನಪೂಜಾದಿ ಉತ್ತಮೋತ್ತಮ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ಮೋಕ್ಷಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಪ್ರಿಯಪತಿಗಳಾಗುವರು ಅಂದರೆ ಅಂತಹ ರಾಜರು ಶೀಘ್ರ ಮುಕ್ತಿಸೌಖ್ಯವನ್ನನುಭವಿಸುವರು. ಈ ಪ್ರಕಾರ ತಿಳಿದು ಪೂರ್ವೋಕ್ತ [ದುಷ್ಟನಿಗ್ರಹಾದಿ] ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದರಿಂದ ನರಜನ್ಮ ಸಫಲವಾಗುವುದು. ಮತ್ತು ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯದ ಪಾಲನೆಯೂ ಆಗುವುದು. ಯಾವ ರಾಜನು ಪೂರ್ವೋಕ್ತ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೋ ಆ ರಾಜನ ಜನ್ಮ ಮತ್ತು ಮರಣ ಇವೆರಡೂ ಸಮಾನಗಳೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಈ ಪ್ರಕಾರ ಉತ್ತಮ ರಾಜನ ಲಕ್ಷಣ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

प्रश्न—हे स्वामिन्! मध्यम राजा किसको कहते हैं सो कृपया समझाइये।

उत्तर—

मध्यम राजाका स्वरूप.

ब्रवीति यः कार्यवशात्पथैव, करोति कार्यं सुखदं तथैव ॥
सर्वस्वनाशेऽपि न चान्यथैव, करोति भूपोस्ति स मध्यमो हि ॥

संस्कृतार्थ—यश्च नृपतिः राज्यरक्षणोपायं स्वेप्सित कार्यं च तत्सिद्धि यावत् नान्यैस्सह गदति अपितु स्वांतरंग एव विचार्य करोति, तथा चोक्तं " हृदयं च न विश्वास्यं राजभिः " राजभिः कदाचित् स्वहृदयमपि न विश्वास्यम्, किं पुनरन्यजनविषये। परंतु सदा स्वपरहितसाधकमेव कार्यं करोति, प्रजानां सुखाय च

यतते, अस्य वचनं भवीति, कदाचित् कार्यवशादेव वदति, वहु-जल्पनेनाविश्वाससंजायते लोके, इति विविक्तम्पुरस्सरं करोति । यच्च वचसा वदति तच्च कार्यकरेन करोति । प्राणेषु गतेष्वपि सर्वस्वविनाशेऽपि न्यायमार्गात् न प्रविचरति इति सो मध्यमो नृपतिरिति ज्ञेयः ॥३॥

That ruler is a mideocre ruler, who if he promises to do something due to certain circumstances fulfils his promises and achieves the object by bringing a happy and successful end. Such a ruler accomplishes the object even at the cost of everything.

राज्यतंत्रका अर्थात् राज्यपालनादिका तथा समस्त-जीवोंको संसार दुःखसे मुक्त करनेके विचारोंको किसी भी मनुष्यके सामने नहीं कहे. [illegible] सब कार्यको उसे स्वयं गुप्तरीतिसे करना चाहिये और यदि कदाचित् उसे विशेष कार्यवशात् करना पडे तो पुनः पुनः सोच करके (वास्तविकताका निश्चय करके और उसका ध्यान करके) करना चाहिए । क्यों कि किन्तु [illegible] प्रगट किये जाते हैं. अर्थात् अपने विचारोंको [illegible] सामने प्रगट करना पड गया तो जैसा विचार किया गया अर्थात् जैसा मुझसे कहा गया है [illegible] उसपर [illegible] सुखशांति देनेवाले [[illegible] हुए] श्रेष्ठ कार्यको करना चाहिए, [illegible]

यदि मैं कष्ट करके भी (अन्य जीवोंके सामने अपने विचारोंको प्रगट करने पर भी) उस कार्यको मैं नहीं करूं तो मेरे समान इस दुनियामें पापी, दुराचारी, झूठा और लबाड मनुष्य कौन होगा ! इसलिए मेरा सर्वस्व (नाशवंत वस्तुका) नाश हो जाय तो भी उसकी मुझे कोई चिंता नहीं है, किंतु मैंने जो स्वपरजीवोंका कल्याण करनेवाले कार्य करनेका निश्चय किया है उस कार्यको करके ही छोडूंगा. अन्यथा कभी भी नहीं करूंगा. ऐसे विचार जो राजा करता है वही राजा मध्यमराजा कहलाता है और वही राजा श्रेयांस राजाके समान साम्राज्यलक्ष्मीको भोग करके संपूर्ण स्वर्ग संपत्तिको पाकर और क्रमसे मोक्षलक्ष्मीका अधिपति बनेगा अर्थात् मोक्षमें जायगा, जो नरदेहका सार है.

सारांश—पूर्वोक्त विधिको मननपूर्वं पढ करके हृदयमें उतारना चाहिए जिससे नरजन्म सफल हो जाय. इस प्रकार मध्य राजाका स्वरूप बताया है ।

રાજ્યતંત્રને અર્થાત્ રાજ્યરક્ષણ વિધિને તથા સ્વપર જીવોને સંસારરૂપી દુઃખથી મુક્ત કરવાના વિચારોને કોઇપણ માણસને કહ્યા સિવાય શ્રેષ્ટ કાર્યને પોતે ગુપ્તરીતે કરવું જોઇએ અને જો કદાચિત વિશેષ કાર્યવશાત્ પોતે બીજાને કહેવું પડે તો અર્થાત ભતભવિષ્યના પરિણામનો વિચાર કરી પોતાના વિચારો બીજા માણસ સમક્ષ પ્રગટ

કરવા પડે તો જેવા વિચાર પ્રગટ થઈ ગયા હોય તેજ પ્રમાણે સ્વપર જીવોને સુખશાંતિ દેવાવાળા આ શ્રેષ્ઠ કાર્યને મારે કરવું જોઈએ અને તેજ મારું પરમ કર્તવ્ય છે. જોઉં તે વિચાર કહીને અર્થાત અન્ય-જીવોની સામે પ્રગટ કરીને પણ તે (શ્રેષ્ઠ કાર્ય) ન કરૂં તો આ દુની-આમાં મારા જેવો પાપી, દુરાચારી, અને અધમ મનુષ્ય કોણ હોઈ શકે. (અર્થાત કોઈપણ ન હોઈ શકે!) તે માટે મારી સર્વસ્વ વસ્તુનો ભલે નાશ થઈ જાય તો પણ મને તેની કંઈપણ ચિંતા નથી પરંતુ મેં સ્વપર જીવોના કલ્યાણાર્થે જે વિચાર પ્રગટ કર્યા છે તે કાર્યને કર્યા સિવાય નહિ છોડીશ. એવો વિચાર જે રાજા કરે છે તે મધ્યમ રાજા કહેવાય છે. અને તે રાજા શ્રેયાંસની માફક સંપૂર્ણ સ્વર્ગસંપત્તિ તથા સામ્રાજ્યલક્ષ્મી ભોગવીને ક્રમાનુસાર મોક્ષલક્ષ્મીનો ધિપતિ બનશે. અર્થાત તેજ રાજા જરૂર મોક્ષપદને પ્રાપ્ત કરશે કે જે નરદેહનો સાર છે.

સારાંશઃ—પૂર્વોક્ત વિધિને મનનપૂર્વક વાંચીને હૃદયમાં ઉતારવી જોઈએ જેથી નરજન્મની સફલતા મળે.

प्रश्न—हे गुरुवर्या ! मध्यमराजा कोणास म्हणतात ते कृपा करून सांगा.

उत्तर—मध्यम राजाचे स्वरूपे

राज्यतंत्र अर्थात राज्यरक्षणाविधिचे व स्वपरजीवांस संसाररूपी दुःखांतून मुक्त करण्याचे कार्य कोणासही बोलून न दाखविता स्वतः गुप्त रीतीने करावयास पाहिजे

अथवा कांहीं कारणवशात् दुसऱ्यास सांगावें लागलेंच तर भूत भविष्यांत होणाऱ्या कार्यफलाच्या परिणामाचा पुन्हा पुन्हा विचार करून दुसऱ्या माणसा समक्ष जे विचार प्रगट केले गेले असतील त्या प्रमाणेंच स्वपर जीवांस सुखप्राप्ति मिळणें करितां मजला ते श्रेष्ठकार्य करावयास पाहिजे व तेंच माझें परम कर्तव्य आहे,आणि जर दुसऱ्यांचें समक्ष बोलून सुद्धां ते श्रेष्ठ कार्य माझे हातून झालें नाहीं तर या लोकामध्यें माझ्या सारखा दुराचारी व अधमाधम दुसरा कोणीही असूं शकणार नाहीं, करितां मी स्वपर जीवांचे कल्याण करण्यासाठीं जे विचार प्रगट केले असतील ते सिद्धीस नेणें करितां माझ्या सर्वस्वाचा नाश झाला तरी हरकत नाहीं. येणें प्रमाणें ज्या राजाचें विचार असतील त्यास मध्यम राजा म्हणता येईल. आणि असे राजे धैर्यास राजा प्रमाणें साम्राज्य तथा स्वर्ग-लक्ष्मीस भोगून शेवटीं मोक्ष-लक्ष्मीस संपादन करतील. सारांश वरील प्रमाणें मध्यम राजाचें लक्षण आहे.

ಪ್ರಶ್ನೆ—ಹೇ ಸ್ವಾಮಿನ್ ! ಮಧ್ಯಮ ರಾಜನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ದಯವಿಟ್ಟು ಹೇಳಿ.

ಉತ್ತರ—ರಾಜನು ತನ್ನ ರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮಿ ವಿಧಿಯನ್ನು ಮತ್ತು ಸ್ವಪರಜೀವಗಳನ್ನು ಸಂಸಾರದುಃಖದಿಂದ ಮುಕ್ತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ವಿಚಾರವನ್ನು ಬೇರೆಯವರ ಎದುರಿಗೆ ಹೇಳದೆ ಇಂಥ ಕಲ್ಯಾಣಕಾರಿಯಾದ

ಶ್ರೇಷ್ಠಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಸ್ವಯಂ ಗುಪ್ತರೀತಿಯಿಂದ ನಡೆಸಬೇಕು. ಮತ್ತು ಒಂದಾನೊಂದು ಸಮಯ ವಿಶೇಷಕಾರ್ಯವಶದಿಂದ ಬೇರೆಯವರಿಗೆ ಗುಪ್ತಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಪ್ರಸಂಗ ಬಂದರೆ ಪುನಃ ಪುನಃ ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಚಾರ ಮಾಡಿ [ಯಥಾರ್ಥವನ್ನು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ ಮತ್ತು ಉಚಿತ ಫಲವನ್ನು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ] ಹೇಳಬೇಕು. ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಜನರು ವ್ಯರ್ಥ ಮಾತಾಡುವವನಿಗೆ ಬಕವಾದಿ ಎಂದು ಹೇಳುವರು. ನಾನು ಜನರಲ್ಲಿ ಯಾವರೀತಿ ನನ್ನ ವಿಚಾರವನ್ನು ಪ್ರಕಟ ಮಾಡಿರುತ್ತೇನೆಯೋ, ಅದರಂತೆಯೇ ಸಮಸ್ತ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ಸುಖ ಶಾಂತಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡ. ಇದೇ ನನ್ನ ಪರಮ ಕರ್ತವ್ಯವೆಂದು ಭಾವಿಸುತ್ತಾನೆಯೋ ನಾನು ಇಂಥ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವೆನೆಂದು ಜನರಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟನೆ ಮಾಡಿಯೂ ಆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡದಿದ್ದರೆ ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಸಮಾನರಾದ. ದುರಾಚಾರಿ, ಪಾಪೀ ಅಸತ್ಯಭಾಷೀ ಬಕವಾದೀ ಯಾರಿರುವರು? ಯಾರೂ ಇಲ್ಲ. ಆದುದರಿಂದ ನನ್ನ ಸರ್ವಸ್ವವೆಲ್ಲಾ ಹಾಳಾದರೂ ಚಿಂತೆ ಇಲ್ಲ. ನಾನು ಯಾವ ಸ್ವಪರಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ಹಿತವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಿದ್ದೇನೆಯೋ ಆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿಯೇ ಬಿಡುವೆನು, ಅನ್ಯಥಾ ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ವಿಚಾರ ಮಾಡುತ್ತಾನೆಯೋ ಅವನೇ ಮಧ್ಯಮ ರಾಜನೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಾನೆ. ಮತ್ತು ಆ ರಾಜನು ಶ್ರೇಯಾಂಸರಾಜನಂತೆ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮಿಯನ್ನನುಭವಿಸಿ ಸಮಸ್ತಸ್ವರ್ಗೀಯಸಂಪತ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಕ್ರಮದಿಂದ ಮೋಕ್ಷಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ರಮಣನಾಗುವನು. ಅಂದರೆ ಮನುಷ್ಯದೇಹದ ಸಾರಭೂತವಾದ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯುವನು.

ಭಾವಾರ್ಥ:—ಪೂರ್ವೋಕ್ತವಿಧಿಯನ್ನು ಮನದಟ್ಟಾಗುವಂತೆ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ ಮಾಡಿದರೆ ನರಜನ್ಮವು ಸಫಲವಾಗುವುದು. ಈ ರೀತಿ ಮಧ್ಯಮರಾಜನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

प्रश्न—हे गुरुदेव ! कृपया अधमराजाका भी लक्षण बतलाइये ।

उत्तर—

करोमि चैवं करोमि चैवं, स्वैरं सदा जल्पति यत्र तत्र ॥
न किंतु किंचित्परार्थकार्यं करोति मूढो ह्यधमो नृपो यः॥४॥
स एव पापी नरकप्रवासी ज्ञात्वेति मुक्त्वा ह्यधमं विचारं ॥
किलोत्तमं वांछितव् कुपथ्यं कौ मध्यमं मोक्षगतिर्यतःस्यात् ॥५॥

संस्कृतार्थ—यश्च शासकः स्वैराचारविधिना वर्तयन् प्रजानां प्रति ' एवं करोमि, एवं करोमि, इति व्यर्थमेव जल्पति, अपितु न किंचिदपि करोति, प्रजाहितकार्ये अनासक्तः सन् स्वविषयपोषणमेव करोति स च अधमः। राजानः प्राणिनां प्राणाः, यदि त एव स्वकर्तव्यविमुखाः भवेयुस्तर्हि कथं जीवंति लोके प्राणिनः। परस्परेर्ष्याद्वेषकलहादीनां संभवात् लोकशांतिर्विनश्येत । यश्च राज्यपदं लब्ध्वापि पापार्जनं करोति नृपतिः, इह लोकेपि तस्य शत्रवस्संजायंते परलोकेपि नरकादि दुर्गतिमवाप्नोति, इति अधमस्य राज्ञः कर्तव्यं विहाय उत्तमस्य मध्यमस्य वा कर्तव्यमनुसरणीयं।लोके राज्यभोगादयः पूर्वोपार्जितसुकृतोदयेन लभंते, तेन चात्र पुनः लोकहितकार्यं क्रियते तर्हि पुनश्च पुण्यमेव प्राप्नोति इति पुण्यानुबंधनं पुण्यं स्यात् । तेन च अभ्युदयं लब्ध्वा क्रमेण मोक्षसाम्राज्याधिष्ठितो भवति ॥ ५ ॥

That ruler is an ignorant, base ruler who brags everywhere that he does this thing and that thing but does nothing, which brings about his own welfare as the welfare of others. Such a ruler is a sinner and goes to Hell. [Rawan who was such a ruler, never attained his own welfare or the welfare of others.]

Any ruler who knowing what is base and having abandoned wicked thoughts, does what is best and conducive to desired objects attains salvation even though he may be a mediocre ruler. (Ramchandraji and Bharat attained Salvation by following such practices.)

Such a ruler having freed himself from all worldly ties, attains Salvation by doing his own as well as others' welfare and such a ruler is also free from all distractions. Such a mediocre ruler before he speaks anything, thinks ten times but when he promises he unfailingly does it.

जो राजा अपनी इच्छानुसार अज्ञानतासे 'मैं यह करूंगा' 'मैं यह करूंगा' इस प्रकार जहां तहां अपनी बड़ाई और परकी बुराई करता फिरता है। किंतु वह पापी राजा अपना और दूसरोंका कल्याण करनेवाला कोई भी पुण्यकार्य किंचित् रूप भी नहीं करता है। (यदि करता है तो दूसरजीवोंका अकल्याण करनेवाला घोर

पापमय ही कृत्य करता है और अहोरात्र सप्तव्यसनमें व दुराचारमें ही मग्न होता हुआ अपेके समान हस्तमें आये हुए अमूल्य नरजन्मरूपी रत्नको फेंक देता है) ऐसे राजाको अधम राजा कहते हैं, अर्थात् ' तपोऽन्ते राज्यं राज्यान्ते नरकम् ' शास्त्रकथनानुसार वह दुष्ट राजा घोरातिघोर नरकमें पड जाता है और वहां भी छेदन, भेदन, ताडन, मारणसे उत्पन्न हुए असह्य दुःखको भोगता हुआ व्यसन लंपटी पापी राजा रावणके समान अनंतकालतक सहता है। यह अधम राजाका लक्षण है !

इस प्रकार पूर्वमें कहे हुए उत्तम, मध्यम और अधम राजाओंके स्वरूपको जान करके और महान् क्लेशका मूल कारण अधमराजाके कृत्यको हालाहल विषके समान दूरसे ही छोड देना चाहिए और मनवांछित फल देने वाला उत्तम अथवा मध्यम राजाओंका कृत्य करके अपने आत्माको कर्मबंधकी परतंत्रतासे श्रीभरतचक्रवर्ति तथा श्रीमंत महाराजा रामचंद्रजीके समान मुक्त करना चाहिए अर्थात् अपनी आत्माको मोक्षमें ही पहुंचा देना चाहिए कि अपनी आत्मा फिर संसाररूपी अग्निमें न पडे।

यह बात जरूर ख्यालमें रखना चाहिए कि अधम राजाका ही कृत्य करके पापी दुष्ट दुराचारी राजा रावण आदिने अपनी आत्माको घोर नरकमें पहुंचा दिया था।

इसलिए हे नरेन्द्रवर्गो! हे भाग्यशालीन राजाओ! तुम लोगोंको रावणके माफिक कुकृत्य करके नरकमें नहीं जाना चाहिए किंतु क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न तीर्थंकर, चक्रवर्ति राजा रामचंद्रजी आदिके समान अपने योग्य कृत्य करके अपनी आत्माको मोक्षमें ही पहुंचाना चाहिए।

आशीर्वादः—" नरेन्द्रधर्मदर्पण " नामक इस ग्रंथको बनानेवाले श्रीमत्परमपूज्य प्रातःस्मरणीय जगद्गुरु विश्ववंदनीय विद्वच्छिरोमणि दिगंबर जैनाचार्य श्री कुंथुसागरजी महाराजका आप लोगोंको पूर्ण आशीर्वाद है।

शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!! सर्वेषास्तु शुभं !

જે રાજા પોતાની ઈચ્છાનુસાર અજ્ઞાનતાથી ' હું આ કરૂં, હું આ કરૂં ' એ પ્રમાણે જ્યાં ત્યાં પોતાની મોટાઈ અને ફરજની ખુશાઈ કરતો ફરે છે અને જે રાજા પોતાના અને બીજાના કલ્યાણ કરવાવાળા કોઇપણ પુણ્યકાર્યને રંચ માત્ર કદી કરતો નથી અને કદાચીત કરે છે તો સ્વપર જીવોનું અહિત કરવાવાળા દુરાગ્રહમય કૃત્યજ કરે [illegible] અને નિરંતર દુરાચારમાંજ મશગુલ રહીને, જેવી રીતે આંધળો માણસ અમૂલ્ય રત્ન હાથમાં આવ્યા છતાં પત્થર સમજી ફેંકી દે [illegible] તેવી રીતે નર જન્મરૂપી રત્નને ફેંકી દે, તે રાજા અધમ અથવા નીચ ગણાય છે. અથવા 'तपोऽन्ते राज्यं राज्यांते नरकम्' ની માફક તે દુષ્ટ રાજા ઘોરાતિઘોર નરકમાં પડીને છે અને ત્યાં પણ છેદન, ભેદન, તાડન, અને મારન કરાયા [illegible] અસહ્ય દુઃખને ભોગવતો વ્યસન લંપટી પાપી . [illegible]

અનંતકાળ સુધી ત્યાં (નરકમાં) સડયા કરે છે. આ અધમ રાજાનુ લક્ષણ છે.

એજ પ્રમાણે ઉપર કહેલા ઉત્તમ, મધ્યમ અને અધમ રાજાનાં લક્ષણ જાણીને અને જે મહાન દુઃખ અને કલેશનું મૂળકારણ અધમરાજાના કૃત્યને હળાહળ ઝેરની માફક દૂરથીજ છોડી દઈને અને મનવાંચ્છિત ફળ આપવાવાળા ઉત્તમ અથવા મધ્યમ રાજાઓના કૃત્ય કરીને પોતાના આત્માને કર્મબંધરૂપી પરતંત્રતાથી શ્રી ભરત-ચક્રવર્તી તથા શ્રીમંત મહારાજા રામચંદ્રજી માફક મુક્ત કરવો જોઈએ. અર્થાત્ પોતાના આત્માને મોક્ષમાં પહોંચાડવો જોઈએ જેથી કોઈપણ દિવસ સંસારરૂપી અગ્નીમાં પોતાનો આત્મા આવી ન પડે અને સાથે એ વાત પણ ધ્યાનમાં રાખવી જોઈએ કે અધમ રાજાનુ કૃત્ય કરીને પાપી, દુષ્ટ, દુરાચારી રાવણે પોતાના આત્માને ઘોર નરકમાં ડૂબો દીધો. માટે હે નરેન્દ્રવર્ગ, હે ભાગ્યશાલીન રાજાઓ, રાવણની માફક કુકૃત્ય કરીને તમારા આત્માને નરકમાં મોકલશો નહિ, પરંતુ ક્ષત્રીયકુળમાં ઉત્પન્ન થએલ તીર્થંકર ચક્રવર્તી રાજા રામચંદ્રજીની માફક સુકૃત્ય કરીને પોતાના આત્માને મોક્ષગામી કરવો જોઈએ.

प्रश्न—हे गुरुदेव ! आतां कृपा करून अधम राजाचे लक्षण सांगावें.

उत्तर—जो राजा आपल्या अज्ञानतेमुळें "मी असें करीन तसें करीन" अशी पोकळ बढाई मारतो व दुसऱ्याची निंदा करून स्वतःची प्रशंसा करतो असा राजा स्वतःचे अगर दुसऱ्याचे हिताकरितां लेशमात्रही पुण्य व सत्कार्य करीत नाहीं किंतु कांहीं केलेच तर स्वतःस

व दुसरेस अधोगतीस पोहचविणारे अत्यंत नीचकर्मच करीत असतो. असा राजा ज्या प्रमाणें अंध मनुष्यास रत्न प्राप्त झाले असतांना सुद्धां त्याची कांहीं एक किंमत न जाणता दगड समजून फेंकून देतो त्या प्रमाणें नरजन्म रूपीरत्न प्राप्त झालेल्या अमूल्य संधीस वाया दवडतो. अर्थात् " तपोऽन्ते राज्यं, राज्यान्ते नरकम् " या म्हणी प्रमाणें रौरव नरकाचा धनी होतो आणि रावणादि विषय लंपटी व दुराचारी राजासारखें छेदन भेदन आणि ताडन या पासून होणारीं दुःखे भोगीत असतात. या प्रमाणें अधम राजाचें लक्षण सांगितलें आहे.

सारांश—वर सांगितल्या प्रमाणें उत्तम, मध्यम व अधम राजाचें लक्षण जाणून घेऊन महान् पापाचे व दुःखाचें मूळ जे अधम राजाचे लक्षण त्यापासून तें "हालाहल विष आहे " असे समजून दूर राहिलें पाहिजे. आणि मनोवांछित फळ देणाऱ्या उत्तम व मध्यम राजाप्रमाणें वागून सम्राट् भरतचक्रवर्ती किंवा श्रीमद् महाराजा रामचंद्रादि सारखे आपले आत्म्याचे कर्मपाश तोडून मोक्षरूपी लक्ष्मीस संपादन केलें पाहिजे कीं जेणें करून पुनरपि जन्ममरणाची यातना सहन कराव्या लागू नये.

विशेषतः ही गोष्ट ध्यानांत ठेवावयास पाहिजे कीं, रावणानें अधमराजाचें लक्षण अंगीकारून शेवटीं तो नर-

काचा धनी झाला म्हणून हे नरेशवर्ग हो ! हे भाग्यशालीन राजा हो ! आपण रावणादि राजा प्रमाणें दुष्ट आचरण करून नरकाचे धनी न होता किंतु क्षत्रिय कुलोत्पन्न तीर्थंकर चक्रवर्ती श्री रामचंद्रजी आदि राजाप्रमाणें योग्य आचरण करून अर्थात् स्वपरहित करून मोक्षलक्ष्मीस प्राप्त घेतले पाहिजे. प्रजेनें सुद्धां ते लक्षांत ठेवावयास पाहिजे कीं उत्तम व मध्यम राजाचीं जीं लक्षणें आहेत त्याप्रमाणें जाणून व अशा (उत्तम व मध्यम) राजांच्या आज्ञा पाळून स्वतःचे आत्मकल्याण करून घ्यावयास पाहिजे. राजानीं रावणादि दुराचारी अधमराजासारखे वागून नरकाचे धनी होऊं नये.

ಪ್ರಶ್ನೆ —ಹೇ ಗುರುದೇವ ! ದಯವಿಟ್ಟು ಅಧಮರಾಜನ ಸ್ವರೂಪ ವನ್ನೂ ಕೂಡ ತಿಳಿಸಿರಿ.

ಉತ್ತರ—ಯಾವ ರಾಜನು ತನ್ನ ಇಚ್ಛಾನುಸಾರವಾಗಿ ಅಜ್ಞಾನತೆ ಯಿಂದ ನಾನು ಇಂಥ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತೇನೆ. ನಾನು ಇಂಥಹ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತೇನೆ ಅಂಥ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತೇನೆಂದು ವೃಥಾ ಆತ್ಮಪ್ರಶಂಸೆ ಯನ್ನೂ ಮತ್ತು ಪರನಿಂದೆಯನ್ನೂ ಮಾಡುತ್ತಾ ತಿರುಗುತ್ತಾನೆಯೋ ಆ ಪಾಪೀ ರಾಜನು ಸ್ವಪರಕಲ್ಯಾಣವನ್ನು ಮಾಡುವಂಥ ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ ವನ್ನು ಸ್ವಲ್ಪವಾದರೂ, ಮಾಡುವದಿಲ್ಲ. ಯಾವುದಾದರೂ ಕಾರ್ಯ ವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾದರೆ ಸ್ವಪರರಿಗೂ ಅಕಲ್ಯಾಣ ಮಾಡುವಂಥ ಘೋರ ಪಾಪಮಯವಾದ ಕೃತ್ಯವನ್ನೇ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಮತ್ತು ಹಗಲಿರುಳು ಸಪ್ತ ವ್ಯಸನಗಳಲ್ಲಿಯೂ ದುರಾಚಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಮಗ್ನನಾಗಿ ಯಾವ

ಪ್ರಕಾರ ಕುರುಡನು ಅಮೂಲ್ಯ ರತ್ನ ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಅದನ್ನು ಒಗೆಯುವನೋ ಅದರಂತೆಯೇ ನರಜನ್ಮರೂಪಿ ರತ್ನವನ್ನು ಪಡೆದರೂ ಅದರ ಮೂಲ್ಯ ತಿಳಿಯದೆ ವ್ಯರ್ಥ ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಅವನೇ ಅಧಮರಾಜನೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಾನೆ. " ತಪೋಂತೇ ರಾಜ್ಯಂ ರಾಜ್ಯಾಂತೇ ನರಕಮ್ " ಎಂದು ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಂತೆ ಘೋರಾತಿಘೋರವಾದ ನರಕದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಛೇದನ ಭೇದನ ತಾಡನಾದಿ ನಾನಾ ಅಸಹ್ಯದುಃಖವನ್ನನುಭೋಗಿಸುತ್ತಾ ವ್ಯಸನಾ ಉಂಟೇ ಪಾಪಿಯಾದ ರಾವಣನಂತೆ ಅನಂತಕಾಲದ ವರೆಗೆ ನರಕದಲ್ಲಿಯೇ ಕೊಳೆಯುವನು. ಇದು ಅಧಮರಾಜನ ಲಕ್ಷಣವೆಂಬುದಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

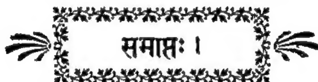
ಈ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ ಉತ್ತಮ, ಮಧ್ಯಮ, ಅಧಮ ರಾಜರ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ಕ್ಲೇಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣೀಭೂತವಾದ ಮತ್ತು ಹಾಲಾಹಲ ವಿಷಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಅಧಮರಾಜನ ಕೃತ್ಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಸ್ವಪರರೆಲ್ಲಾ ಹಿತಕಾರಿಯಾದ ಉತ್ತಮ ಅಥವಾ ಮಧ್ಯಮ ರಾಜನ ಕೃತ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿ ಶ್ರೀಭರತಚಕ್ರವರ್ತಿ ಮತ್ತು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರರಂತೆ ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಪರತಂತ್ರರೂಪವಾದ ಕರ್ಮಬಂಧನವೆಂಬ ಬೇಡಿಯನ್ನು ಮುರಿದು ಸ್ವತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಅವಿನಶ್ವರವಾದ ಮೋಕ್ಷಸುಖವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದೇ ಅತ್ಯಂತ ಮುಖ್ಯ ಉದ್ದೇಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕು

ಅಧಮರಾಜನ ಕೃತ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದ ಗರ್ವಿ ರಾವಣನು ತನ್ನ ಆತ್ಮನನ್ನು ನರಕಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಆದುದರಿಂದ ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿಗಳಾದ ರಾಜರುಗಳೇ ! ರಾವಣನಂತೆ ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿ ನರಕಗಾಮಿಗಳಾಗಬೇಡಿರಿ. ಆದರೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯಕುಲದಲ್ಲಿ ಅವತರಿಸಿದ ತೀರ್ಥಂಕರ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಮತ್ತು ರಾಮಚಂದ್ರರಂತೆ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಲೋಕೋದ್ಧಾರಿಯಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಮೋಕ್ಷ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದ ಅಧಿಪತಿಗಳಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶವನ್ನು ಯಾವಾಗಲೂ ಲಕ್ಷ್ಯದಲ್ಲಿಡಬೇಕು.

ಆಶೀರ್ವಾದ.

ನರೇಶಧರ್ಮದರ್ಪಣವೆಂಬೀ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಶ್ರೀಮತ್ಪರಮ ಪೂಜ್ಯ, ಪ್ರಾತಃಸ್ಮರಣೀಯ, ಜಗದ್ಗುರು, ವಿಶ್ವವಂದನೀಯ, ವಿದ್ವಚ್ಛಿರೋಮಣಿ, ದಿಗಂಬರ ಜೈನಾಚಾರ್ಯ ಶ್ರೀಕುಂಥುಸಾಗರಮುನೀಶ್ವರರು ತಮ್ಮೆಲ್ಲರಿಗೂ ಈ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ ಕೈವಲ್ಯಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾಪ್ತಿಸಲು ಸಾಮರ್ಥ್ಯವು ದೊರೆಯಲೆಂದು ಆಶೀರ್ವದಿಸುತ್ತಾರೆ.

इस प्रकार श्री परमपूज्य विद्वच्छिरोमणि आचार्य श्री कुंथुसागर महाराजके द्वारा विरचित नरेशधर्मदर्पण पूर्ण हुआ.



=* निवेदन *=

जो श्रीआचार्य कुंथुसागर ग्रंथमालाके उत्तमोत्तम सर्व ग्रंथोंका स्वाध्याय करना चाहते हैं वे १०१) देकर ग्रंथमालाके स्थायी सदस्य बनें। स्थायीसदस्योंको ग्रंथमालासे प्रकाशित व प्रकाश्य सर्व ग्रंथ विनामूल्य दिये जाते हैं।

निवेदक—
मंत्री—आचार्य कुंथुसागर ग्रंथमाला
सोलापुर.